गोरख पांडेय की कविता

बंद खिरकियों से टकराकर

घर-घर में दीवारें हैं
दीवारों में बंद खिड़कियां हैं।
बंद खिड़कियों से टकराकर
अपना सिर
लहूलुहान गिर पड़ी है वह
नई बहू है, घर की लक्ष्मी है
इनके सपनों की रानी है
कुल की इज्ज़त है
जहां अर्चना होती उसकी
वहां देवता रमते हैं
वह सीता है सावित्री है
वह जननी है
स्वर्गादपि गरीयसी है
लेकिन बंद खिड़कियों से टकराकर
अपना सिर
लहूलुहान गिर पड़ी है वह

क़ानून समान है
वह स्वतंत्र भी है
बड़े बड़ों की नज़रों में तो
धन का एक यंत्र भी है
भूल रहे वे
सबके ऊपर वह मनुष्य है
उसे चाहिए प्यार
चाहिए खुली हवा
लेकिन बंद खिड़कियों से टकराकर
अपना सिर
लहूलुहान गिर पड़ी है वह
चाह रही है वह जीना
लेकिन घुट-घुटकर मरना भी
क्या जीना ?
घर-घर में श्मशान-घाट हैं
घर-घर में फ़ासी-घर हैं
दीवारों से टकराकर
गिरती है वह
गिरती है आधी दुनिया
सारी मनुष्यता गिरती है
हम जो ज़िंदा हैं
हम सब अपराधी हैं
हम दंडित हैं.

कांग्रेस के पांव पर खुद कुल्हाड़ी मारते दीपेन्द्र हुड्डा

फ़रीदाबाद (म.मो.) एक ओर मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा झूठे एवं भ्रामक विज्ञापन रोज़मर्रा के अखबारों में छपवा कर जनता को बरगलाने का प्रयास कर रहे हैं; वहीं उनके सुपुत्र दीपेन्द्र सिंह हुड्डा दिनांक 7 जुलाई को एक नौटंकी करने यहां आ पहुंचे।

कार्यक्रम था ओल्ड फ़रीदाबाद के रेलवे स्टेशन पर प्रदर्शण करने का। मुद्दा था रेलवे द्वारा किराया-भाड़ा बढाये जाने का। हरियाणा से एकमात्र कांग्रेसी सांसद दीपेन्द्र क्योंकि मुख्यमंत्री के बेटे हैं इसलिये स्टेशन पर अपनी-अपनी हाजरी दर्ज कराने को न केवल तमाम स्थानीय कांग्रेसी, विधायक मौजूद थे बल्कि आगामी चुनावों के लिये टिकट के दावेदार भी दल-बल सहित मौजूद थे। लेकिन इन सभी तथाकथित नेताओं के आह्वान पर जनता की कुल हाजरी 250 से अधिक नहीं रही। इसी से पता चलता है कि नेताओं की जनता पर पकड़ कितनी है।

प्रदर्शन का समय जानबूझ कर रखा गया था प्रातः 8-9 का। उस समय स्टेशन पर यात्रियों, खास कर दैनिक आने-जाने वाले स्थानीय यात्रियों की। ये वोटर भी होते हैं और इन्हीं को यह जताना होता है कि कांग्रेस पार्टी रेल किराया-भाड़ा बढने के गम में किस कदर दुबली हुई जा रही है। वैसे सभी यात्री बख़ूबी समझ रहे थे कि इन कांग्रेसियों की इस नौटंकी का असली मकसद क्या है।

इस ड्रामेबाज़ी का नेतृत्व क्योंकि मुख्यमंत्री का बेटा कर रहा था, इसलिये न केवल रेलवे स्टेशन पुलिस छावनी बना हुआ था बल्कि बाहर राजमार्ग तक पुलिस वाले डंडा फटकार रहे थे। इसके चलते किसी भी वाहन, यहां तक कि रिक्शा को भी राजमार्ग से उतर कर स्टेशन की ओर नहीं जाने दिया जा रहा था। करीब एक किलोमीटर का यह सफ़र यात्रियों को पैदल ही तय करना पड़ रहा था। उन यात्रियों की तो हालत ज़्यादा ही खराब हुई जो लम्बी दूरी की यात्रा करने वाले थे और जरूरी सामान साथ में था अथवा गोद में बच्चे थे। जाहिर है इस तरह सताये गये यात्री कांग्रेस को गालियां देने के अलावा और तो कुछ दे नहीं सकते, वोट तो बहुत दूर की बात ठहरी।

इसके अलावा स्टेशन पर इस नौटंकी के चलते ट्रेनों के आवागमन में जो देरी एवं यात्रियों को असुविधा हुई उससे भी कांग्रेस को किसी लाभ की बजाय हानि ही अधिक हुई। अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के लिये कांग्रेसियों न रेलमंत्री का पुतला भी फूंका यद्यपि इस तरह की ड्रामेबाज़ी से कुछ होना-जाना नहीं होता, फ़िर भी यदि दीपेन्द्र को पुतला ही फुंकवाना था तो वे यह काम अपने शहर रोहतक में भी तो कर सकते थे। इससे कम से कम फ़रीदाबाद के रेल यत्रियों को तो उस असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता जो उन्हें इस ड्रामेबाज़ी से हुई।

गैस की काला-बाजारी

करनालः अशोक जैनः गैस वितरकों द्वारा उपभोक्ता को तंग करने की आदत बन गई है कभी भी सिलेंडर समय पर नहीं आता और न ही समय पर बुक होता, सरकार द्वारा जारी कि गई सूचना के तहत आप टेलिफ़ोन पर अपना सिलेण्डर बुक कराने की सुविधा दी गई है मगर 20 दिन से पहले सिलेण्डर बुक नहीं करते मगर कई वितरक फोन शिकायत करो फिर रटा रटाया जवाब मिलता है कि फोन खराब है या व्यस्त होने का बहाना बनाते हैं। उच्चाधिकारियों को टेलिफ़ोन न उठाने की शिकायत करने के लिये पहले तो फ़ोन नम्बर ढूंढना पड़ता है मिल जाये तो शिकायत पर गैस एजेंसियों को कोई असर नहीं होता।

अनपढ़ ग़रीब व्यक्ति किसे अपने दिल की बात सुनाये और उनकी सुनने वाला भी कोई नहीं है। ना ही उपभोक्ता को कोई सही सलाह देता है। वितरक सिर्फ उनको गुमराह करने में लगे रहते हैं।।

हर महीने मिलने वाला सिलेंडर पहले तो 20 दिन से पहले बुक ही नही करते उसके बाद आपको 40, 45 दिनों में मिलेगा। ऐसा क्यों, क्या ऐसा नियम है मगर अपनी जरूरत पूरी करने के लिए ब्लैक में सिलेंडर लेना पड़ता और अपनी जेब कटवानी पड़ती है।

अगर आपको ब्लैक में सिलेंडर चाहिए तो 1500 जब चाहें मर्जी ले लें। आपको देर नहीं लगेगी प्रश्न यह है कि ब्लैक गैस बेचने वालों के पास सिलेंडर कहां से आ जाते हैं।

सिविल अस्पताल में मरीज देखने वाला डॉक्टर है या कन्डक्टर

करनाल (म.मो.) जिले के सिविल अस्पताल में कुछ दिन पहले एक मज़ेदार नज़ारा देखने को मिला। हुआ यूं कि सुबह अस्पताल में जैसे ही डॉक्टरों ने ओ.पी.डी में मरीज़ों को देखना शुरू किया तो एक डॉक्टर के कमरे के बाहर खड़े चपरासी से दो मरीज़ों ने लड़ना शुरू कर दिया कि अन्दर बैठा व्यक्ति डॉक्टर नहीं है और इसलिये वे उसको नही दिखायेंगे। अब क्योंकि उनकी पर्ची उसी डॉक्टर की बनी हुई थी इसलिये चपरासी उनको समझा रहा था कि उनको उसे ही दिखाना पड़ेगा। यह घटना कुछ दिन पहले करनाल सिविल अस्पताल में घटी। जब झगड़ा ज़्यादा बढ गया तो कुछ और डॉक्टर भी वहां आ गये और उन्होंने उन मरीज़ों से उस डॉक्टर को न दिखाने का कारण पूछा। इस पर उन्होंने बताया कि यह डॉक्टर नहीं बस का कन्डक्टर है क्योंकि सुबह गांव से अस्पताल जिस प्राईवेट बस से वह आये थे यह आदमी उस बस में टिकट काट रहा था। इस पर और डॉक्टरों को हंसी भी आई और हैरानी भी हुई। लेकिन तहकीकात करने पर उन ग्रामीणों की बात सच निकली। पता चला कि डॉक्टर साहब ने दो प्राइवेट बसें खरीद कर चला रखी हैं। और सुबह-सुबह कई बार कण्डक्टर के न आने पर वह उनमें टिकट काट आते हैं। बड़ी मुश्किल से उन ग्रामीणों को समझा पाये कि सुबह बेशक में वह कण्डक्टरी करता हो पर है ये असल में डॉक्टर ही। तब जाकर उन्होंने उसको दिखाया। अब उपरी कमाई तो किसी तरह की भी हो वह बेइज्जती तो कभी न कभी करवा ही देती है! वैसे न सही ऐसे सही।

पेज एक का शेष

हरियाली रास आ रही है जज स्वतन्त्र कुमार को भी

बस इसी का लाभ उठाते हुए स्वतंत्र कुमार ने तुगलकी फ़रमान जारी कर दिया कि कालिंदी कुंज के 10 किलोमीटर के दायरे में किसी भी इमारत का कम्पलीशन सर्टिफ़िकेट जारी न किया जाय। इसका तुरन्त नतीजा यह हुआ कि करीब एक लाख आवासीय यूनिट जो बनकर तैयार हैं, अधर में लटक गयी हैं। इस बीच जनवरी 2014 में उत्तर प्रदेश सरकार ने महज 100 मीटर के घेरे को कालिंदी कुंज पक्षी विहार के लिये सुरक्षित घोषित कर दिया है। ज़मीनी स्थिति का यही तकाज़ा भी था। अन्यथा तमाम बनी बनाई इमारतों को गिराना पड़ता। वैसे भी यह विहार सिमट कर नाम मात्र का विहार ही रह गया है। हालांकि अनाधिकृत एवं ग़ैरकानूनी रूप से विहार के चारों तरफ़ इमारतें बनाने वालों को अनाप-शनाप स्वीकृति देने वाले अधिकारियों व नेताओं पर न कोई कार्यवाही की गयी है और न ही की जायेगी ।

आम चर्चा है कि स्वतंत्र कुमार का हरित प्राधिकरण मामले को बिना अपनी कीमत वसूले बंद नहीं होने देगा। ऐसा ही एक अन्य तुगलकी फ़रमान दिल्ली की तमाम आवासीय सोसायटीज़ में वर्षा जल संचयन को लेकर स्वतंत्र कुमार ने निकाला है। सम्बन्धित विभाग को आदेश दिया गया है कि वे हज़ारों सोसायटियों में जाकर रिपोर्ट बनायें कि वहां वर्षा जल संचयन के नियमों की पालना हो रही है या नहीं। जानकारों का मानना है कि इस मामले में भी सोसायटीज़ को कम्पलीशन सर्टिफ़िकेट देने पर रोक लगा दी जायेगी तथा सौदेबाज़ी के उपरांत मामला रफ़ा-दफ़ा हो जायेगा।

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204।

करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन फुटवियर जवाहर मार्केट शदर बाज़ार से फोन नं 9896436739 पर संपर्क करें।